मौखिक

क. वह दिन स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अनोखा था क्योंकि उस दिन देश को स्वतंत्र कराने के प्रयास में क्रांतिकारियों को न्याय न देकर उन्हें फाँसी और कालेपानी की सज़ा दी गई। इससे क्रांतिकारियों के भारत को अन्यायी सरकार से छुटकारा दिलाने के इरादे और भी दृढ़ हो गए।

ख. हर रोज़ अब्दुल सबसे प्रसन्नतापूर्वक व्यवहार करता था। वह किसी का गाना सुनता था तो किसी के साथ शतरंज खेलता था।

ग. हल्दीघाटी के युद्ध में राजपूत अपने विशेष वस्त्र, केसरिया बाना पहनकर मृत्यु को गले लगाने जाते थे। केसरिया रंग त्याग और बलिदान का रंग माना जाता है।

घ. सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है — यह क्रांतिकारियों का गीत था जिसके द्वारा वे अपने बलिदान की भावनाओं को प्रकट करते थे। इस समय न्यायालय के बाहर खड़ी भीड़ यह गीत गा रही थी कि वे सब उन क्रांतिकारियों के साथ हैं जिनके साथ न्याय के नाम पर अन्याय किया जा रहा है। कोई भी मृत्यु से भयभीत नहीं था।

लिखित

क. अदालत जाने से पहले सबने आनुष्ठानिक तरीके से भोजन किया। अच्छे कपड़े पहने। ठाकुर रोशनसिंह ने इत्र की शीशी से सब को थोड़ा-थोड़ा इत्र लगाया।

ख. सबने एक साथ भोजन किया क्योंकि उन्हें इस बात का आभास हो गया था कि यह उनका अंतिम भोजन है।

ग. निर्णयवाले दिन फाँसी की कोठरियाँ साफ़ करवाई गई थीं। इस घटना से पता चलता है कि तीन क्रांतिकारियों को फाँसी की सज़ा दी जानेवाली थी।

घ. राजेंद्र लाहिड़ी के चेहरे पर हमेशा की तरह बालसुलभ मुसकान थी। रामप्रसाद बिस्मिल के चेहरे पर अवज्ञा का भाव था तथा ठाकुर रोशन सिंह के चेहरे पर खुशी और विजय का भाव था।

आशय स्पष्टीकरण—

ठाकुर रोशन सिंह के मन में यह भाव था कि देश पर बलिदान होकर वे जीत गए और अन्य सभी को प्रतीक्षा करनी है।

सही विकल्प चुनकर ✓ लगाइए—

क. खाना खाने के समय बिस्मिल ने क्या सोचा?

- ☑ आज आनुष्ठानिक तरीके से भोजन करना चाहिए।

ख. जेलर को बेड़ियाँ डालने के लिए क्या हिदायत थी?

- ☑ बेड़ियों की कीलों की जाँच कर ली जाए।

ग. अदालत के बाहर का दृश्य कैसा था?

- ☑ बाहर खड़ी भीड़ गाना गा रही थी।